आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2717 • उदयपुर, शुक्रवार 03 जून, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

श्रीनगर (जम्मू-कश्मीर) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान ने दिव्यांगता–मुक्ति का यज्ञ वर्षो से प्रारंभ किया है। इस प्रयास–सेवा से 4,50,000 से अधिक दिव्यांग भाई–बहिनों को सकलांग होने का हौसला मिला है। लाखों दिव्यांगों को कृत्रिम अंग लगाकर जीवन की मुख्यधारा से जोड़ा गया है। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 21 से 23 मई को 34 आसाम राईफल्स गुण्ड, गादंरबल में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता 34 आसाम राईफल्स, श्रीनगर रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 157, कृत्रिम अंग माप 10, कैलिपर माप 90 की सेवा हुई तथा 34 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री कर्नल राजेन्द्र जी कराकोटी (कमाण्ड ऑफिसर, आसाम राईफल्स), अध्यक्षता मेजर अनुप जी (मेजर, आसाम राईफल्स), विशिष्ट अतिथि श्री प्रशान्त जी भैया (अध्यक्ष, नारायण सेवा संस्थान), श्रीमती वन्दना जी अग्रवाल (निदेशिका, नारायण सेवा संस्थान) रहे।

डॉ. अंकित जी चौहान (ऑर्थोपेडिक सर्जन), डॉ.मानस रंजन जी साहू (पी.एन. डो.), श्री सु ील कुमार जी (टेक्निीशियन) सहित शिविर टीम में श्री लालसिंह जी भाटी (शिविर प्रभारी), श्री दिलीप सिंह जी चौहान (उप प्रभारी), श्री फतेह लाल जी (फोटोग्राफर), श्री मुकेश जी त्रिपाठी (सहप्रभारी), श्री बहादुर सिंह जी मीणा, श्री देवीलाल जी मीणा (सहायक) ने भी सेवायें दी।

ग्वालियर (मध्यप्रदेश) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान ने दिव्यांगता–मुक्ति का यज्ञ वर्षो से प्रारंभ किया है। इस प्रयास–सेवा से 4,50,000 से अधिक दिव्यांग भाई–बहिनों को सकलांग होने का हौसला मिला है। लाखों दिव्यांगों को कृत्रिम अंग लगाकर जीवन की मुख्यधारा से जोड़ा गया है। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 17 मई को कैसर हॉस्पीटल आमखों, ग्वालियर में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता लांयस क्लब, ग्वालियर आस्था रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 169, कृत्रिम अंग माप 55, कैलिपर माप 20 की सेवा हुई तथा 06 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि डॉ. बी.आर. जी श्रीवास्तव (कैंसर हॉस्पीटल, डायरेक्टर), अध्यक्षता श्रीमती रजनी जी अग्रवाल (अध्यक्ष, लांयस क्लब आस्था), विशिष्ट अतिथि श्री जगदीश शरण जी गुप्ता (रीजन चेयरपर्सन), श्रीमान् तालीब जी खान (जोन चेयरपर्सन), श्रीमान् रमेश जी श्रीवास्तव (गाइडिंग लायन)रहे।

डॉ. सिद्धार्थ जी लाम्बा (ऑर्थोपेडिक सर्जन), डॉ. रामनाथ जी ठाकुर (पी.एन.डो.), श्री किशन जी सुथार (टेक्निीशियन) सहित शिविर टीम में श्री हरिप्रसाद जी (शिविर प्रभारी), श्री गोपाल जी गोस्वामी, श्री हरीश सिंह जी रावत (सहायक) ने भी सेवायें दी।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच,
ऑपरेशन चयन एवं
कृत्रिम अंग (हाथ-पांव) माप शिविर

दिनांक : 5 जून, 2022

- औरंगाबाद, बिहार
- कृषि उपज मण्डी, ओरछा रोड, पृथ्वीपुर, जिला निवाड़ी, म.प्र.
- जेबीएफ मेडिकल सेंटर, भारतीय ग्राम सदल्लापुर, राम धर्म कांठा के पास, गजरौला, उमरोह, उ.प्र.
- हनुमान व्यायामशाला, पटेल मैदान के पास, अजमेर, राज.

इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

पू. कैलाश जी 'मानव'
संस्थापक चेयरमैन, नारायण सेवा संस्थान

'सेवक' प्रशान्त भैया
अध्यक्ष, नारायण सेवा संस्थान

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

1,00,000 We Need You !
से अधिक सहयोग देकर, दिव्यांगों के सपनों को करें साकार
अपने शुभ नाम या प्रियजन की स्मृति में कराये निर्माण

मानवता के मन्दिर में बनेंगे कई वार्ड-सेवा कक्ष

* 450 बेड का निःशुल्क सेवा हॉस्पीटल * 7 मंजिला अतिआधुनिक सर्वसुविधायुक्त* निःशुल्क शल्य चिकित्सा, जांचें, ओपीडी * भारत की पहली निःशुल्क सेन्ट्रल फेब्रीकेशन यूनिट * प्रज्ञाचक्षु , विमंदित, मूकबधिर, अनाथ एवं निर्धन बच्चों को निःशुल्क आवासीय व्यावसायिक प्रशिक्षण

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org
Cont. : 0294-6622222, +917023509999 (WhatsApp)

श्रद्धालुओं ने किया भक्ति का रसपान

आध्यात्मिक ज्ञान के प्रसार हेतु अप्रेल–मई में मुरैना, कैलारस–मुरैना एवं वृदांवन में श्रीमद्भागवत कथाओं का पारायण संस्थान के तत्वावधान में सम्पन्न हुआ। जिनका विभिन्न मीडिया चैनलों से प्रसारण हुआ। जिससे घर बैठे श्रद्धालुओं ने भक्ति रस का पान किया।

मुरैना – दूर वार परिवार कोलुआ के सहयोग से मुरैना (मध्यप्रदेश) में 27 अप्रेल से 3 मई तक दोपहर 1 से अपरान्ह 4 बजे तक श्रीमद्भागवत कथा पारायण का भव्य आयोजन धिरौना सारकार के सानिध्य में सम्पन्न हुआ। कथा व्यास पूज्य श्री रमाकान्त जी महाराज ने कहा कि भगवतकथाओं की बात ही निराली है। बड़े–बड़े साधु संत, सिद्ध योगीन्द्र मुनीनन्द्र भी उन्हें सुनने को तत्पर रहते है। सातों दिन कथा का सत्संग चैनल से देशभर में प्रसारण हुआ, जिससे श्रद्धालुओं ने घर बैठे ही भक्तिगंगा में डुबकी लगाकर अपने को धन्य किया।

वृदांवन –राधा गाविन्द मंदिर, श्रीबृजसेवा धाम, वृंदावन–मथुरा में 10से 16 मई तक कथा व्यास पूज्य श्री बृजनन्दन जी महाराज के श्रीमुख से पतित पावनी श्रीमद्भागवत का पारायण सानन्द सम्पन्न हुआ। जिसका आस्था चैनल से प्रसारण भी हुआ। कथा व्यास पूज्य महाराजश्री ने भगवान के विविध लीला प्रसंगो का मार्मिक वर्णन करते हुए कहा कि महान पुरूशों ओर भास्त्रों के वचनों में वि वास करके हमें अपने जीवन को सार्थक करना चाहिए। मनुष्य को काम, भय, क्रोध,मोह के वश होकर या किसी अन्य दुर्गण के प्रभाव में एक क्षण भी व्यर्थ नहीं कर मानव देह को धारण करने का अर्थ समझते हुए उसे धन्य करने के कार्य करने चाहिए। इससे परमात्मा भी प्रसन्न होंगे।

कैलारस – मां बहरार माता मन्दिर, कैलारस–मुरैना (मध्यप्रदे ा) में 14 से 20 मई तक श्रीमद्भागवत का आयोजन सानन्द सम्पन्न हुआ। श्री विश्वंभर दयाल जी परिवार के सौजन्स से आयोजित इस भक्ति ज्ञान यज्ञ में दूर दराज के सैकड़ो श्रद्धालुओं ने भाग लिया। व्यास पीठ पर बिराजीत पूज्य श्री रमाकान्त जी महाराज ने कहा कि परमात्मा नित्य है। उसका संयोग भी नित्य है। विश्वास और श्रद्धा के अभाव में हम उसे भूले हुए है। यही वजह है कि जीवन में पग–पग पर हमें ठोकर खानी पड़ती हैं। हमें आज और अभी से उसकी शरण लेनी चहिए जो नित्य सत्य है। कथा का संस्कार चैनल से सातों दिन देशभर में सीधा प्रसारण हुआ।

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

लाला अपने व्यवहार को बनाये रखना। ये पिताश्री हैं महाभारत में आया चारों पाण्डव घायल और युधिश्ठिर जब जल लेने लगा तो यक्ष ने कहा युधिष्ठिर सुनो ये सरोवर मेरा है, ये तालाब मेरा है। मेरे प्रश्न का उत्तर दिये बिना तुम्हारे भाइयों ने जल का स्पर्श कर लिया इसलिए बेहोश होकर के गिर पड़े हैं। मेरे प्रश्न का पहले उत्तर दो युधिश्ठिर बड़े प्रश्न हाथ जोड़कर खड़े हो गये सोचा भाई कोई ऐसी आकाशवाणी आ रही है यक्ष की आकाशवाणी आ रही आवाज आ रही है। और मेरे भीमसेन जैसे भाई जो 10 हजार हाथियों की बल वाले जिनकी भुजाएं वो भी घायल होकर के मूर्छित होकर के गिर पड़ा है और गाण्ड़ीवधारी अर्जुन जब पितामह ने कहा था प्यास लगी है। दुर्योधन बहुत ठण्ड़े –ठण्ड़े में जल ले आया और फिर भीश्मपितामाह उदास हो गये। उठो –उठो गाण्ड़ीव धारी अर्जुन उठो और जब गाण्ड़ीव धारी अर्जुन उठे। एक तीर से पाताल से गंगाजल निकाल दिया। भीश्म पितामाह की प्यास बुझा दी। ऐसे गाण्ड़ीव धारी अर्जुन भी घायल होकर के गिर पड़ा। ये नकुल भी बेहोश हो गया। ये सहदेव भी बेहोश हो गया। तो युधिष्ठिर ने कहा आप प्रश्न पूछे। पहला प्रश्न पूछा धरती से भारी कौन है और युधिश्ठर ने तुरंत उत्तर दिया माता। धरती से भारी माता है। माता का आदर रखना चाहिए, माता की सेवा करनी चाहिए, माता के साधनों का ध्यान रखना चाहिए माता को प्रसन्न रखना चाहिए।

महिम जी – माता के नैनो में ममता
भाई में हो प्यार भरा।।

गुरुजी – लाला ये भजन ये साढ़े पाँच रुपये का फाइबर का एक पुतला अम्बाला में मेड़िकल साइन्स के विधार्थियों के लिए कई दूकाने वहाँ बॉयलोजिकल सोक्स है। उसमे ये डाइसे बन जाते है हम माता के गर्भ में ऐसे आये थे। और हमारा अनाहत चक्र। उसको फेंक भी दिया तो टूटा नहीं वो निर्जीव है लेकिन अपना किसी का हृदय नहीं तोड़ देना है। अपनी वाणी को कसैली वाणी नहीं बना देना। अपनी वाणी को कड़वी वाणी नहीं बना देना। और भाव हमारे अच्छे हैं। तो बरकत हमारी साथी है। और कर्म हमारे अच्छे हैं तो घर में मथुरा काशी है। और वाणी और कर्म ये भावों की सन्तान है। इसलिए भावशुद्धि, संवेगभाव शुद्धि कहने को तो बोलते हैं सभी कहते हैं भाई भाव अच्छे रखो। लेकिन ये मिलावट क्यों ये छल क्यों, ये कपट क्यो? ये मन में कुछ और है ऊपर से कुछ और है अरे ये आदमी बोलता तो मीठा है लेकिन इसका मन मलीन है ? मलीन बनकर के नहीं रहना।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मित्ति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

सम्पादकीय

कोरोना महामारी ने भारी संख्या में तबाही फैलाई है। इस दौरान अनेक लोग हमसे सदा–सदा के लिये बिछुड़ गये। बड़ी मात्रा में शारीरिक रूप से क्षति हुई है। वैज्ञानिकों, सरकारों, प्रशासनों, समाज सेवियों, सकारात्मक विचारकों तथा अंनत लोगों की शुभकामनाओं के प्रभाव से वातावरण बदलने लगा है। तन और धन की क्षति भी खूब हुई है। पर इसे पुनः अर्जित करना कठिन नहीं है। इस कालखण्ड में सर्वाधिक क्षति मन की हुई है। मन में कमजोरी के कारण भय,स्वार्थ व केवल स्वयं की चिंता का भाव ज्यादा प्रभावी हो गया है। मानव सभ्यता व भारतीय संस्कृति के पूर्व प्रमाण बताते है कि हमारी जड़ें परहित की भूमि में हैं। इसलिये परार्थ के भाव को भी पुनः सिंचित करना एक अनिवार्य कर्म है। हम सबकों तन धन के साथ मानव मन को भी सुदृढ़ करता है। हमारी सामाजिक, संरचना, हमारा धार्मिक तानाबाना, हमारी ऊँची सोच इन सबके लिये उर्वरक है। इनका उपयोग कुछेक को नहीं, हरेक को करना है। देखेंगे कि दृश्य बदलते देर नहीं लगेगी।

कुछ काव्यमय

मेरी अतीत
मेरी अंगुली थामकर
मुझे सुखद भविष्य तक
अवश्य ले जायेगा।
देखना जल्दी ही
मानवता पुलकित होगी,
एक दूसरे पर भरोसा,
भाईचारा,फिर
पहले जैसा हो जायेगा।

अपनों से अपनी बात

मानव सेवा ही माधव सेवा

किसी गांव के समीप एक संन्यासी का आश्रम था। उसे गांव वालों से जो कुछ भी भिक्षा मिलती, उससे वह भोजन बनाता था और अपने लिए थोड़ा भोजन रखकर बाकी भोजन भिखारियों में बाँट देता। एक दिन कुछ देवताओं ने संन्यासी के दर्शन दिए और कहा– तुम सच्चे संन्यासी हो। हम तुम्हें एक बीज देते हैं, इसे मिट्टी में दबा देना। इसके पौधे से पुष्प उगने पर तुम्हें पैसों की कमी नहीं रहेगी। यह कहकर देवता अंतर्धान हो गए। सन्यासी ने आश्रम के बगीचे में बीज बो दिया। कुछ दिनों के बाद एक पौधा उग आया। धीरे –धीरे पौधा बढ़ता गया। एक दिन उस पर पुष्प खिल उठा। वह पुष्प, सामान्य पुष्प नहीं, स्वर्ण पुष्प था। प्रतिदिन एक पुष्प खिलता, संन्यासी उससे प्राप्त धन से भिखारियों को भोजन कराता। संन्यासी ने कुछ दिनों पश्चात् पंचतीर्थ दर्शन करने का निश्चय किया। उसका एक शिष्य था नरेश। संन्यासी ने स्वर्ण –पुष्प के विषय में नरेश को बताया और पंचतीर्थ दर्शन को चला गया। कुछ दिन तक ठीक चलता रहा। भिखारी खुशी–खुशी भोजन करते रहे। धीरे–धीरे नरेश के मन में कपट आ गया। वह स्वयं को आश्रम का स्वामी मानने लगा। वह भिखारियों को भला–बुरा कहने लगा। भिखारियों को भोजन भी न देता। नरेश ने तय किया कि संन्यासी के लौटने के पूर्व, वह सारा धन समेटकर आश्रम से भाग जाएगा। सुबह उसने देखा कि स्वर्ण –पुष्प खिला ही नहीं। पौधा भी सूख गया है। नरेश बड़ी कठिनाई से कुछ दिन बिता पाया। धन समाप्त हो गया। उसे भूखा रहना पड़ा। कभी–कभी ही भोजन मिलता। चार माह के बाद संन्यासी लौटा तो नरेश ने प्रणाम करते हुए कहा– गुरुजी अब स्वर्ण पुष्प नहीं खिलता।

संन्यासी ने पूछा– स्वर्ण–पुष्प क्यों नहीं खिलता?

मालूम नहीं गुरुजी–नरेश बोला। संन्यासी को देखकर भिखारियों की भीड़ जमा हो गई थी। उन्होने नरेश की शिकायत संन्यासी से की। नरेश की दृष्टि नीचे झुक गई।

संन्यासी ने कहा–देवताओं की .पा से यह पौधा मुझे मिला था, परन्तु तुम्हारे अनुचित व्यवहार के कारण स्वर्ण–पुष्प खिलना बंद हो गया। फिर संन्यासी ने भिखारियों से कहा–तुम कल आना मैं तुम्हें भोजन दूँगा। यह सुनकर भिखारी चले गए। अगले दिन जब संन्यासी उठा तो उसने देखा कि वह पौधा फिर खड़ा हो गया। उसमें स्वर्ण पुष्प खिल उठा है। तुम दरिद्र नारायण का आदर करना सीखो। यदि नर की सेवा करोगे, तभी नारायण प्रसन्न होंगे। मानव सेवा ही माधव सेवा है वत्स। **–कैलाश 'मानव'**

संयम और विवेक

एक व्यक्ति एक प्रसिद्ध संत के पास गये। बोले गुरुदेव मुझे जीवन के सत्य का पूर्ण ज्ञान हैं। मैंने शास्त्रों का काफी ध्यान से अध्ययन किया है फिर भी मेरा मन किसी काम में नहीं लगता। जब भी कोई काम करने के लिये बैठता हूँ तो मन भटकता है। आप और हमारे साथ भी ऐसा होता है। तो मैं उस काम को छोड देता हूँ। इस अस्थिरता का कारण क्या है? संत ने उसे रात तक इंतजार करने के लिये कहा। रात होने पर वो उसे एक झील के किनारे ले गये। झील के अंदर चांद के प्रतिबिम्ब को दिखाकर बोले– एक चांद आकाश में और एक झील में। तुम्हारा मन इस झील की तरह है। तुम्हारे पास ज्ञान तो है लेकिन तुम उसको इस्तेमाल करने की बजाय, तुम उसे सिर्फ मन में लाकर बैठे हो। ठीक उसी तरह जैसे झील असली चांद का प्रतिबिम्ब लेकर बैठी है।

तुम्हारा ज्ञान तभी सार्थक हो सकता है। जब तुम उसे अपने व्यवहार में संयमता और एकाग्रता के साथ अपनाने का प्रयास करोगे। झील का चांद तो मात्र एक भ्रम है तुम्हें कार्यो में मन लगाने के लिये, आकाश के चन्द्रमा की तरह बनना है। झील का चांद तो पानी में पत्थर गिराने पर हिलने लगता है। जिस तरह से तुम्हारा मन जरा–जरा सी बातों पर डोलने लगता है ना? तुम्हें अपने ज्ञान और विवेक को जीवन में नियमपूर्वक लाना होगा। अपने जीवन को सार्थक और लक्ष्य हासिल करने में लगाओगे, खुद को आकाश के चांद की तरह पाओगे। शुरू में थोडी परेशानी आयेगी पर कुछ समय बाद ही तुम्हें इसकी आदत हो जायेगी। इसलिये आप और हम ध्यान रखें कि जैसे मन नहीं लगता तो मन लगाने के लिये सबसे बड़ा एक तरीका है कि आप उसमें खो जायें। आप उसको समझने की कोशिश करें। उसमें विवेक लगायें, उसमें संयम रखें। क्योंकि अगर आप विवेक नहीं लगायेंगे, आप रटा मारेंगे। आप किसी चीज को ऐसे याद करने की कोशिश करेंगे रटा मारकर तो नहीं होगी। लेकिन आप उसे समझकर याद करेंगे तो तुरन्त याद हो जायेगी। इसलिये ध्यान रखें संयम और विवेक का जो कोम्बीनेशन है वो बराबर चलना चाहिये।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

एक दिन देव श्रीमाली ने सूचना दी कि यू.आई. टी. ने जमीन आवंटित कर दी है। यह सुनते ही कैलाश खुश हो गया मगर अगले ही क्षण विषाद की रेखाएं भी उसके चेहरे पर उभर आईं, वह सोचने लगा कि जमीन तो मिल गई है मगर इसके लिये रुपयों की व्यवस्था कैसे होगी। आवंटन पत्र हाथ में आया तो पता चला कि जमीन के लिये 86 हजार रु. जमा कराने हैं। इतनी बड़ी राशि एक साथ जुटाना संभव नहीं था।

कैलाश यह सोच कर यू.आई.टी. ओफिस गया कि किसी तरह यह राशि आधी हो जाए तो उसके लिये आसानी रहेगी। संबंधित अधिकारी के पास जाकर उसने अपना परिचय दिया तो वे नारायण सेवा की भूरि भूरि प्रशंसा करने लगे। कैलाश को उनकी बातें सुनकर विश्वास हो गया कि ये जरूर मदद करेंगे। कैलाश ने उनसे विनती की प्लोट हेतु इतनी राशि जुटाना संभव नहीं हो पायगा, अगर इसे आधी कर दें तो बहुत अच्छा रहेगा।

अधिकारी ने साफ मना कर दिया कि यह संभव नहीं है, आप के पास यदि पर्याप्त रुपये नहीं है तो आप लिख कर दे दो जिससे हम आपके नाम का आवंटन रद्द कर दें। अधिकारी की बात से कैलाश भौंचक्का रह गया, अभी थोड़ी देर पहले यही अधिकारी उसकी प्रशंसा कर रहा था और अब कह रहा कि प्लोट केन्सल करवा लो, बाद में ले लेना। कैलाश उसके सामने से एकदम खड़ा हो गया और कड़े स्वर में बोला –कैन्सल क्यूं करवाएं? जैसी स्थिति आयेगी सामना करेंगे। यह कह कर वह वहां से निकल पड़ा।

यू.आई.टी. में कलेक्टर रहे नहीं थे वरना किसी की इतनी मिन्नतें करने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। ट्रस्ट में बोर्ड बन गया था तथा ट्रस्टी व चेयरमेन की नियुक्ति हो गई थी। कैलाश सभी ट्रस्टियों के घर गया और उनसे प्लोट की राशि आधी करने का अनुरोध किया। कई तो टाल गये, जो सहमत हुए उन्होंने ट्रस्ट की मीटिंग में यह विषय रखने का आश्वासन दिया। ट्रस्ट की मीटिंग में यह विषय रखने का आश्वासन दिया। ट्रस्ट की मीटिंग से पहले इसका एजेन्डा तय होता है। एक ट्रस्ट ने जब इस एजेन्डे में नारायण सेवा को आवंटित जमीन आधी कीमत पर देने का बिन्दु भी रखवाना चाहा तो अधिकारी ने साफ इन्कार कर दिया।

ट्रस्ट की मीटिंग हुई, सभी एजेन्डों पर बातचीत हो गई तो अन्य विषयों पर चर्चा शुरू हुई। एक ट्रस्टी ने इसी के तहत नारायण सेवा को आवंटित जमीन की राशि आधी करने का प्रस्ताव रख दिया। इस प्रस्ताव के आते ही उस अधिकारी ने भी एक प्रस्ताव रख दिया। जिसके तहत व्यापार मण्डल को आवंटित जमीन की राशि भी आधी करने की मांग थी। यह नारायण सेवा के प्रस्ताव में अडंगा लगाने का प्रयास था, इस अधिकारी को न जाने क्या कष्ट था कि वह पहले दिन से जमीन आवंटन में रुकावट पैदा करने की कोशिश कर रहा था।

अंश - 114

कैसे करें केमिकल का दुष्प्रभाव

केमिकल से पके फल खाना हानिकारक होता है। जानते हैं इनसे बचाव के बारे में–

रंग से करें पहचान : केमिकल से पके फलों का रंग एक समान नहीं होता है। उन पर धब्बे हो जाते हैं।

कुछ खास तरीके : केमिकल से पके आम, प्राकृतिक तरीके से पके आम की तुलना में हल्के होते हैं। पानी से भरी बाल्टी में उतराने लगते हैं। स्वाद कम या फलों का रसीलापन कम हो जाता है। इनकी गंध भी बदल जाती है।

ऐसे फलों के दुष्प्रभाव : उल्टी जैसा मन, दस्त, छाती में जलन, पेटदर्द, अल्सर, सिरदर्द, चक्कर, हाथ पैरों में सुन्नता, याद्दाश्त में कमी आदि।

इस तरह करें बचाव : केमिकल वाले फलों को अच्छे से धोएं और आधे घंटे तक साफ पानी में भिगोकर रख दें। जल्दी खाना चाहते हैं तो गुनगुने पानी में कम से कम पांच मिनट के लिए भिगो दें। इसके बाद इनका छिलका उतारकर ही खाएं।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

दान ने बचाई जान

नारायण सेवा संस्थान के देश–विदेश में सेवा कार्यो से प्रभावित होकर मैं भी इसके साथ जुड़ा। शिक्षा विभाग में शिक्षक रहते दिव्यांग व दुःखिजन की सेवा के लिए अपनी सामर्थ्यनुसार आर्थिक सहयोग भेजता रहा। संस्थान का एक दान पात्र में भी मैंने यहां एक सोसायटी में रखवाया, जिससे एकत्रित राशि भी संस्थान के माध्यम से सेवा कार्यो में लग रही है। एक बार बचन सिंह जी के साथ पर्यटन की दृष्टि से उदयपुर जाना हुआ। संयोगवश वह दुर्गाश्टमी का दिन था और संस्थान में कन्या पूजन का भव्य आयोजन था। शताधिक दिव्यांग कन्याओं के निःशुल्क ऑपरेशन के बाद उनका माता स्वरूप पूजन देख कर हम संस्थान के सेवा–समर्पण के आगे नतमस्तक थे।

इसे बाद संस्थान के आर्थिक सहयोग का क्रम नियमित बन गया। सेवा–भावना से दिए गए दान का महत्व भी इस दिन समझ में आया जब एक सड़क दुर्घटना में मैं और मेरे मित्र बाल–बाल बच गए। स्कूटर पर बाजार में थे कि पीछे से तेजगति कार ने स्कूटर का टक्कर मार दी। स्कूटर और हम करीब 10 मीटर दूर जाकर गिरे। स्कूटर को काफी क्षति हुई। लेकिन मैं और पीछे बैठा बंदा साफ बच गए। वास्तव में सच्चे मन से दिए गए दान में बड़ी शक्ति है।

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन
2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार
2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं
2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं
2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी
2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र
आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन
वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ
6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ
विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

अनुभव अमृतम्

ये रामाजी नशा छोड़ रहे हैं, इन्होंने गंगाजल हाथ में लिया है मैं बोला रहा हूँ आज से मैं रामा जी पिताजी का नाम लिया भैरुजी की सौगन्ध, महादेव जी की सौगन्ध, बावजी की सौगन्ध, माता दुर्गा की सौगन्ध लेकर के नशा छोड़ता हूँ, भांग छोड़ता हूँ, शराब छोड़ता हूँ। जब तीन बार बोलकर के छोड़ दिया तो वास्तव में आदिवासी क्षेत्र के वनवासियों ने जीवनभर नशा नहीं किया। इसका प्रमाण कुछ तो कच्ची शराब बनाते थे, और वनवासी क्षेत्र में कुछ शराब की दूकानें थी जिसका रिकार्ड एकसाइड में रखा जाता था। उस वनवासी क्षेत्र में अलसीगढ़ के एक क्षेत्र में नाई के क्षेत्र में झाड़ोल, कोटड़ा, जब तक केम्प होते रहे, मुझे आबकारी के आयुक्त महोदय माननीय परमेश्वर जी के साथ में जो रिटायर्ड हो गये है, और उनके साथी सी.पी. व्यास साहब जिनका बहुत आशीर्वाद रहा।

सी.पी. साहब का उन्होंने मुझे कहा था कैलाश जी आपने दो–तीन साल तक काम किया, इसमें हमारी रिवन्यू कम हुई है। शराब कम बिकी है। तथ्यों के आधार पर हमने पाया। वनवासी विश्वास के योग्य है।

श्रद्धावान् लभ्यते ज्ञानम्।
विश्वासम् फल दायकम्।

आप करके देखिये। एक बार मैंने कोई, साधक दो दिन पहले ही जोईन किया था। बहुत जरुरी काम था हॉस्पीटल का 7000 हजार रुपये उनको दिए नगद जयपुर से कुछ मशीनें लेकर के आना है। ऑपरेशन थिएटर के लिए चले गये– मशीनें लाये। ऑपरेशन थिएटर में लगी। उन्हीं दिनों में मुझे कुछ कहा था विश्वास किया यदि 7000 हजार रुपये लेकर के चला जाता तो आप क्या करते? मैंने कहा– मैं और भीख मांगता। दान के लिए भिक्षा मांगने के लिए निकलता।

मर जाऊँ माँगू नहीं, अपने तन के काज।
परहित कारण मांगता, मोहे ना आवे लाज।। मैंने कहा उस समय और मेरे पास कोई साधक जाने योग्य नहीं था। सबको काम सौंपे हुए थे। ऑपरेशन थिएटर चालू करना जरुरी था। मैंने विश्वास किया। मैं उत्तीर्ण हो गया। मैं पास हो गया। करके देखिये :–

सेवा ईश्वरीय उपहार– 467 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com•आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023